BACKGROUNDERS
Press Information Bureau
Government of India

विश्व एड्स दिवस

भारत की वैश्विक एड्स नियंत्रण सफलता पर निर्माण

30 नवम्बर, 2025

मुख्य विशेषताएं

- विश्व एड्स दिवस हर वर्ष **1 दिसंबर को मनाया जाता है**।
- **2025 का थीम है 'व्यवधान पर विजय, एड्स प्रत्युत्तर में सुधार'।**
- भारत में मजबूत नीतिगत ढांचा: **एचआईवी/एड्स (रोकथाम और नियंत्रण) अधिनियम, 2017 जैसे ऐतिहासिक उपाय** एचआईवी के साथ रहने वाले लोगों के अधिकारों की रक्षा करते हैं और भेदभाव को रोकते हैं।
- **राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम (एनएसीपी)** के माध्यम से प्रगति। भारत ने एनएसीपी चरणों में विकसित रणनीतियों के माध्यम से नए संक्रमणों को कम किया है और एआरटी तक पहुंच का विस्तार किया है।

परिचय

विश्व एड्स दिवस हर वर्ष 1 दिसंबर को एचआईवी / एड्स महामारी के बारे में जागरूकता बढ़ाने, एचआईवी से संबंधित बीमारियों से मरने वालों को याद करने और एचआईवी / एड्स के साथ रहने वाले लोगों का समर्थन करने के लिए आयोजित किया जाता है। इसे पहली बार 1988 में विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) द्वारा चिह्नित किया गया था और तब से यह सरकारों, समुदायों और व्यक्तियों के लिए रोग के खिलाफ लड़ाई में एकजुट होने का एक मंच बन गया है। इस वर्ष का विषय **"व्यवधान पर विजय, एड्स प्रत्युत्तर में सुधार" है।** यह न केवल पिछली प्रगति को संरक्षित करने की आवश्यकता पर जोर देता है, बल्कि एचआईवी सेवाओं को अधिक उपयुक्त, न्यायसंगत और समुदाय-नेतृत्व वाला बनाने के लिए उन्हें बदलने की आवश्यकता पर जोर देता है। यह विषय महामारी, संघर्षों और असमानताओं के कारण होने वाले व्यवधानों का समाधान करने की तात्कालिक आवश्यकता पर बल देता है, जिसके कारण देखभाल तक पहुंच को सीमित होता है। भारत हर वर्ष राष्ट्रव्यापी जागरूकता अभियानों, सामुदायिक आउटरीच गतिविधियों एवं स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के तहत राष्ट्रीय एड्स

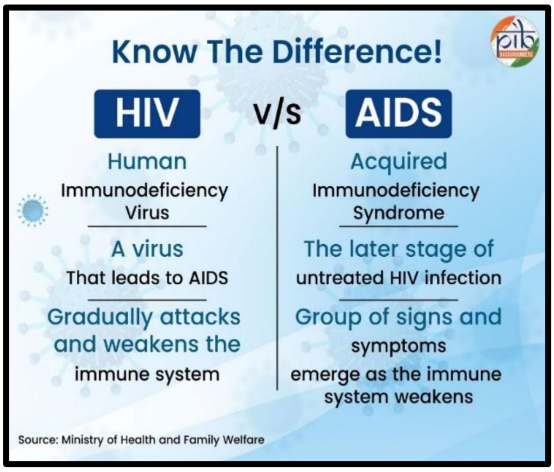

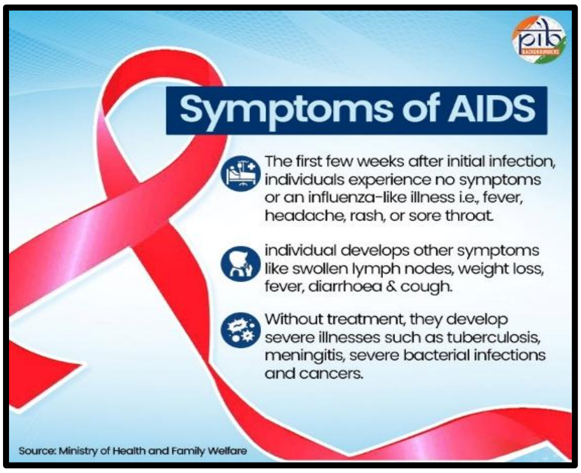

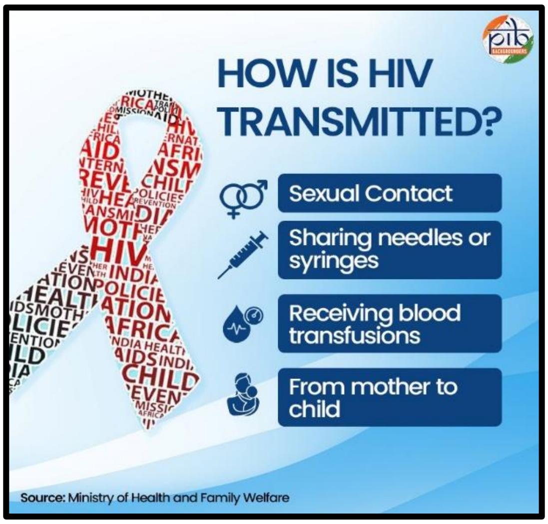

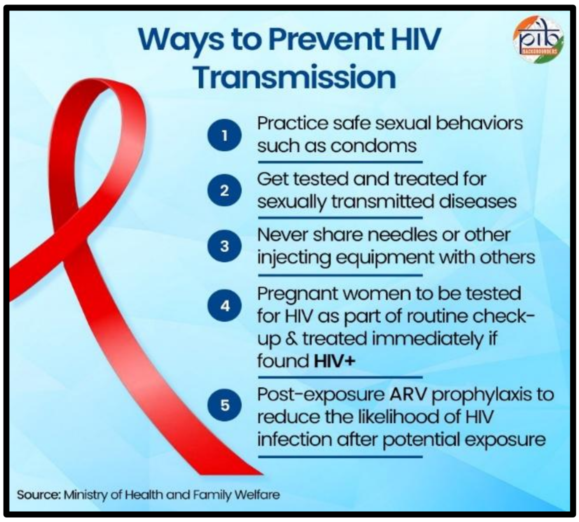

नियंत्रण संगठन (नाको) के नेतृत्व में नए सिरे से सरकारी प्रतिबद्धताओं के माध्यम से विश्व एड्स दिवस मनाता है।

भारत की यात्रा

भारत के एड्स नियंत्रण कार्यक्रम को विश्व स्तर पर एक सफलता की गाथा के रूप में सराहा गया है।1 प्रारंभिक चरण (1985-1991) में एचआईवी मामलों की पहचान करने, सुरक्षित रक्त आधान सुनिश्चित करने और लक्षित जागरूकता पैदा करने पर ध्यान केंद्रित किया गया। राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन (नाको) और राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम (एनएसीपी) के शुभारंभ के साथ प्रतिक्रिया ने गति पकड़ी, जिसे 1992 में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के तहत एक बहु-क्षेत्रीय राष्ट्रीय रणनीति के समन्वय के लिए स्थापित किया गया था। समय के साथ, एनजीओ और एचआईवी के साथ रहने वाले लोगों (पीएलएचआईवी) के नेटवर्क की भागीदारी बढ़ाने के लिए एनएसीपी का ध्यान राष्ट्रीय प्रत्युत्तर से अधिक विकेन्द्रीकृत प्रत्युत्तर की ओर स्थानांतरित हो गया।

[1] https://naco.gov.in/nacp

2010 में 0.33% से 2024 में 0.20% की कमी दर्ज की गई है। 0.20% की प्रचलन दर के साथ भारत वैश्विक औसत 0.7% की तुलना में काफी कम है, जो यह दर्शाता है कि देश कम-स्तरीय महामारी को नियंत्रित रखने में बेहतर प्रदर्शन कर रहा है। 2010 में 1.25 लाख नए संक्रमणों से 2024 में 64,500 तक की अधिक तेजी से कमी हुई है, जो NACP मानकों के अनुसार 2010 के आधार वर्ष की तुलना में 49% की कमी को दर्शाती है। यह इसी अवधि के दौरान वैश्विक 40% कमी के औसत से अधिक है।"

पूर्ण संख्या में, भारत के नए संक्रमण वैश्विक कुल (2024 में 1.3 मिलियन) का केवल 5 प्रतिशत प्रतिनिधित्व करते हैं, जो सरकार द्वारा कुशल संसाधन आवंटन और एंटीरेट्रोवाइरल थेरेपी (एआरटी) पहुंच के पैमाने को उजागर करता है।

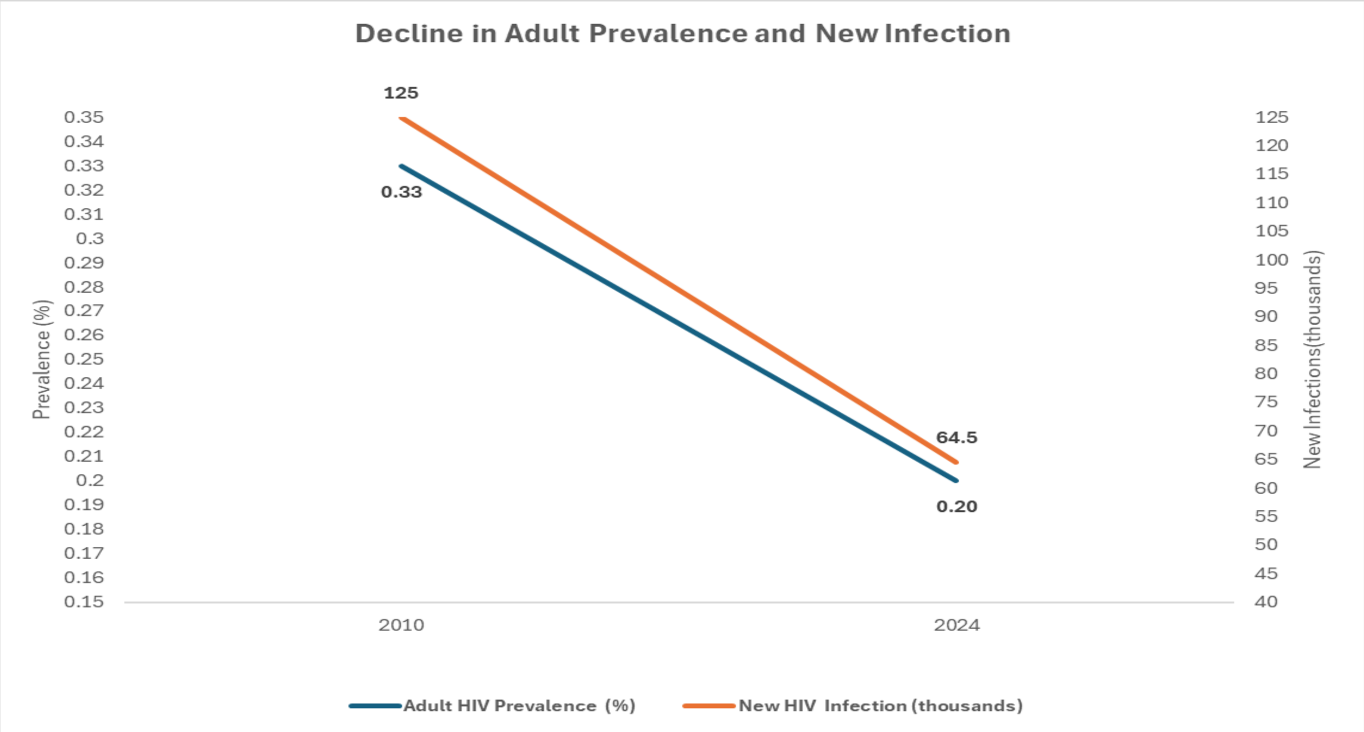

2010 में 1.73 लाख मृत्यु से 2024 में 32,200 तक 81.40% की कमी दर्ज की गई है। यह गिरावट 2025 तक एचआईवी के साथ रहने वाले 18 लाख से अधिक लोगों (PLHIV) को निःशुल्क एआरटी प्रदान करने, 94% एआरटी रिटेंशन और 97% वायरल सप्रेशन दर हासिल करने से संभव हुई है–ये वे प्रमुख तत्व हैं जो एचआईवी से एड्स की ओर बढ़ने की प्रक्रिया को रोकते हैं।
2024 में वैश्विक मृत्यु आंकड़ा (6,30,000) भारत के 2024 के आंकड़े (32,200) की तुलना में बेहद अधिक है, जहाँ भारत का कुल योगदान वैश्विक बोझ का मात्र 5% है। यह अंतर भारत के बेहतर परिणामों को दर्शाता है, जो किफायती जेनेरिक दवा उत्पादन (वैश्विक एआरटी का 70% आपूर्ति) और समुदाय आधारित भागीदारी से प्रेरित हैं। भारत की उपलब्धियाँ वैश्विक कमी के रुझानों से आगे हैं और UNAIDS के 95-95-95 लक्ष्य के अनुरूप हैं

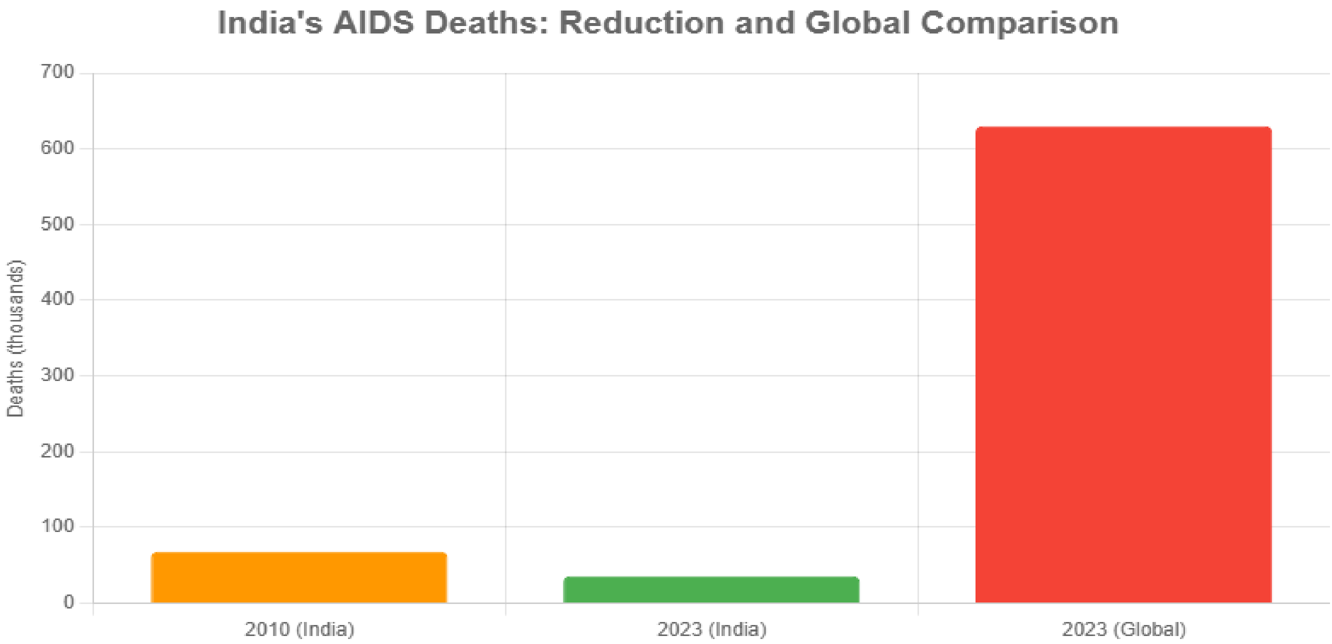

राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम (एनएसीपी)

यह पांच चरणों के माध्यम से विकसित हुआ है, जो आधारभूत जागरूकता से व्यापक रोकथाम, परीक्षण, उपचार और स्थिरता की ओर बढ़ रहा है।

एनएसीपी I (1992-1999)

- भारत का पहला व्यापक एचआईवी/एड्स रोकथाम और नियंत्रण कार्यक्रम शुरू किया।
- उद्देश्य: **एचआईवी के प्रसार को धीमा करना** और रुग्णता, मृत्यु दर और **एड्स के समग्र प्रभाव को** कम करना।

एनएसीपी II (1999-2006)

- दो प्रमुख उद्देश्यों पर ध्यान केंद्रित किया:
  - **भारत में** एचआईवी के प्रसार को कम करना।
  - **एचआईवी/एड्स से निपटने के लिए** दीर्घकालिक राष्ट्रीय क्षमता को मजबूत करना।

एनएसीपी III (2007-2012)

- लक्ष्य: **2012 तक** एचआईवी महामारी को रोकना और उलटना।
- रणनीति:
  - उच्च जोखिम वाले समूहों (एचआरजी) **और** सामान्य आबादी **के बीच रोकथाम को बढ़ाना।**
  - रोकथाम, देखभाल, सहायता और उपचार **सेवाओं** को एकीकृत करें।

- मुख्य अतिरिक्त: जिला स्तरीय समन्वय और निगरानी के लिए **जिला एड्स रोकथाम और नियंत्रण इकाइयों (डीएपीसीयू)** का निर्माण, जिसमें कलंक/भेदभाव रिपोर्टिंग भी शामिल है।

एनएसीपी IV (2012-2017)

- लक्ष्य: **महामारी के उलटने में तेजी लाना** और एक एकीकृत प्रतिक्रिया **सुनिश्चित करना।**
- उद्देश्य:
  - **नए संक्रमणों में 50 प्रतिशत की कमी** (2007 की बेस लाइन की तुलना में)।
  - सभी पीएलएचआईवी के लिए **व्यापक देखभाल, सहायता और उपचार।**
- **2017 तक एड्स को समाप्त करने के लक्ष्य को आगे बढ़ाने के लिए** विस्तारित (2021-2030)।
- विस्तार के दौरान प्रमुख पहल:
  - **एचआईवी/एड्स (रोकथाम और नियंत्रण) अधिनियम, 2017) -** यह एचआईवी (पीएलएचआईवी) के साथ रहने वाले लोगों के प्रति भेदभाव को प्रतिबंधित करता है, गोपनीयता सुनिश्चित करता है, और रोकथाम और देखभाल तक पहुंच को बढ़ावा देते हुए परीक्षण और उपचार के लिए सूचित सहमति को अनिवार्य करता है।
  - **मिशन संपर्क-** इसका उद्देश्य एचआईवी (पीएलएचआईवी) के साथ रहने वाले लोगों को "वापस लाना" था, जिन्होंने एंटीरेट्रोवाइरल थेरेपी (एआरटी) को बंद कर दिया था - यानी उन लोगों का पता लगाना और उन्हें फिर से शामिल करना जो "फॉलो-अप के लिए खो गए" थे। यह समुदाय-आधारित परीक्षण और अनुवर्ती दृष्टिकोण का इस्तेमाल करता है।
  - **'टेस्ट एंड ट्रीट' नीति** (सभी निदान किए गए मामलों के लिए एआरटी की पहल)

एनएसीपी V (2021-2026)

15,471.94 करोड़ रुपये के परिव्यय के साथ केंद्रीय क्षेत्र की योजना के रूप में शुरू किए गए पांचवें चरण का उद्देश्य पिछली उपलब्धियों को आगे बढ़ाना और चुनौतियों का लगातार समाधान करना है। इस चरण का लक्ष्य व्यापक रोकथाम, परीक्षण और उपचार सेवाओं के माध्यम से 2030 तक सार्वजनिक स्वास्थ्य खतरे के रूप में एचआईवी/एड्स महामारी को समाप्त करने में मदद करके संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य 3.3 का समर्थन करना है।

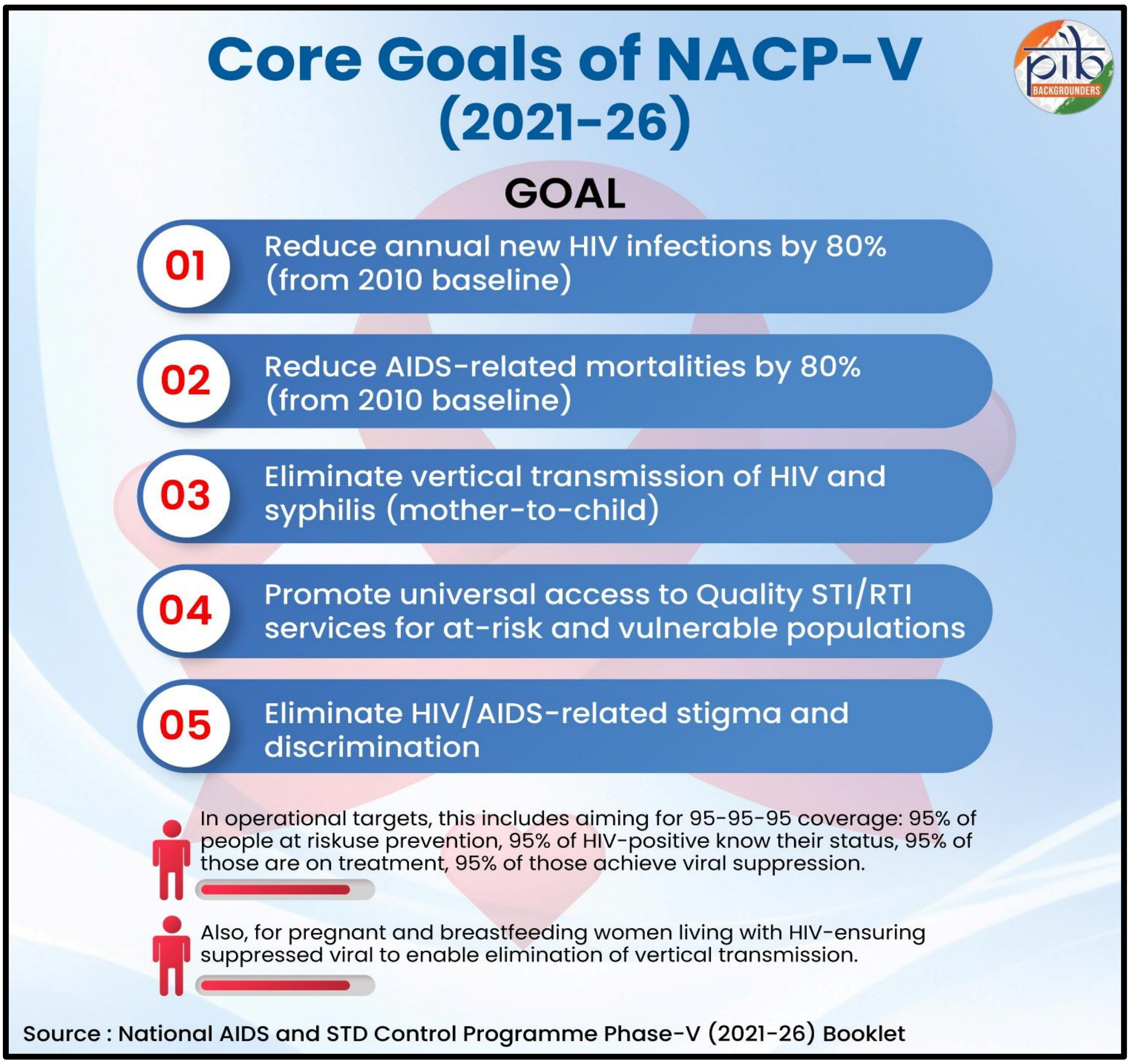

एनएसीपी-V के तहत प्रमुख रणनीतिक क्रियाकलापों की योजना बनाई गई

उपरोक्त लक्ष्यों और सिद्धांतों को प्राप्त करने के लिए, एनएसीपी-V ने विभिन्न जनसंख्या समूहों, सेटिंग और जरूरतों के अनुरूप रणनीतिक क्रियाकलापों के एक सेट की योजना बनाई है। प्रमुख में शामिल हैं:

नए संक्रमणों को कम करने के लिए

- उच्च जोखिम वाली आबादी के लिए साथी के नेतृत्व वाले लक्षित क्रियाकलाप (टीआई) और वर्कर योजनाओं का लिंक बनाए रखना और विकसित करना।
- विशिष्ट आबादी और भौगोलिक क्षेत्रों के अनुकूल व्यापक रोकथाम पैकेज प्रदान करें।
- नशीली दवाओं के सेवनकर्ताओं (ओपिओइड प्रतिस्थापन चिकित्सा सहित), जेल/बंद सेटिंग के लिए उपाय, और समुदाय-आधारित एकीकृत सेवा वितरण मॉडल को इंजेक्ट करने के लिए क्रियाकलाप को बढ़ाना।
- सामान्य आबादी, किशोरों और युवाओं के लिए निरंतर व्यवहार परिवर्तन संवाद (बीसीसी)।

एड्स से संबंधित मृत्यु दर को कम करने/उपचार और देखभाल में सुधार के लिए

- संक्रमण के मामले का पता लगाने सहित एचआईवी परामर्श और परीक्षण सेवाओं (एचसीटीएस) का विस्तार।
- उच्च गुणवत्ता वाली एंटीरेट्रोवाइरल थेरेपी (एआरटी), तेजी से एआरटी दीक्षा, विभेदित सेवा वितरण मॉडल और उपचार दिशानिर्देशों के नियमित अद्यतन तक व्यापक पहुंच सुनिश्चित करना।
- स्क्रीनिंग, पुष्टिकरण परीक्षण, उपचार और देखभाल सेवाओं के बीच संबंध को मजबूत करना; अनुवर्ती कार्रवाई के लिए नुकसान को कम करना; सार्वजनिक क्षेत्र की प्रयोगशालाओं का इस्तेमाल करके वायरल लोड निगरानी का अनुकूलन करना।
- यौन और प्रजनन स्वास्थ्य (विशेष रूप से महिलाओं के लिए) सहित एकीकृत देखभाल पैकेज प्रदान करना, और एचआईवी के साथ रहने वाले बच्चों के लिए सेवाएं प्रदान करना।

वर्टिकल संक्रमण को खत्म करने के लिए (मां से बच्चे)

- एचआईवी और सिफलिस के लिए गर्भवती महिलाओं के परीक्षण के लिए राष्ट्रीय मातृ एवं बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के साथ तालमेल को मजबूत करना।
- प्रसवपूर्व स्क्रीनिंग के लिए दोहरी परीक्षण किट (एचआईवी + सिफलिस) को रोल आउट और स्केल करें।
- निदान की गई महिलाओं को उपचार, एआरटी का पालन, प्रतिधारण, परिवार नियोजन सेवाओं, प्रारंभिक शिशु निदान और निजी क्षेत्र की भागीदारी से शीघ्र जोड़ना सुनिश्चित करें।

सार्वभौमिक एसटीआई/आरटीआई सेवाओं के लिए

- नामित एसटीआई/आरटीआई क्लीनिकों (डीएसआरसी) का रखरखाव और सुदृढ़ीकरण; एचआईवी प्लेटफार्मों पर एसटीआई/आरटीआई सेवाओं को एकीकृत करना।
- एसटीआई के लिए सक्रिय मामले-खोज; एसटीआई/आरटीआई प्रबंधन दिशानिर्देशों का नियमित अद्यतन; प्रयोगशाला क्षमता और आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करना।
- निजी क्षेत्र को शामिल करना और एसटीआई/आरटीआई सेवा प्रावधान के लिए व्यापक स्वास्थ्य प्रणाली के साथ समन्वय करना।

कलंक और भेदभाव को कम करने के लिए

- एचआईवी (पीएलएचआईवी) और प्रमुख आबादी के साथ रहने वाले लोगों की सहायता के लिए सामुदायिक प्रणालियों का संस्थागत सुदृढ़ीकरण।
- हितधारकों को संवेदनशील बनाना; संवाद अभियान; सामाजिक सुरक्षा योजना शुरू करना; नीति/विनियमन सुदृढ़ीकरण (एचआईवी और एड्स (रोकथाम और नियंत्रण) अधिनियम, 2017 के तहत)।
- कलंक/भेदभाव की निगरानी के लिए रणनीतिक सूचना प्रणाली; समुदाय-आधारित निगरानी; अधिनियम के तहत राज्य स्तरीय लोकपाल प्रणाली।

एचआईवी/एड्स जागरूकता के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदम

1. राष्ट्रव्यापी जागरूकता अभियानों को मजबूत करना

- नाको व्यापक मल्टीमीडिया अभियानों के माध्यम से राष्ट्रीय एचआईवी/एड्स जागरूकता प्रयासों का नेतृत्व करता है। मास मीडिया, डिजिटल प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया का उपयोग व्यापक और युवा दर्शकों तक पहुंचने के लिए किया जाता है।

Figure: [Video by NACO on ending Stigma and Discrimination in the Workplace]

Figure: [Stop HIV Stigma & Discrimination - Awareness Campaign | Advertising Campaign #AbNahiChalega]

2. विस्तारित आउटडोर आउटरीच

- होर्डिंग, बस पैनल, सूचना कियोस्क, लोक प्रदर्शन और आईईसी वैन के माध्यम से जागरूकता को मजबूत किया गया। ये उपकरण देश भर में उपलब्ध सेवाओं और सुविधाओं को बढ़ावा देने में मदद करते हैं.

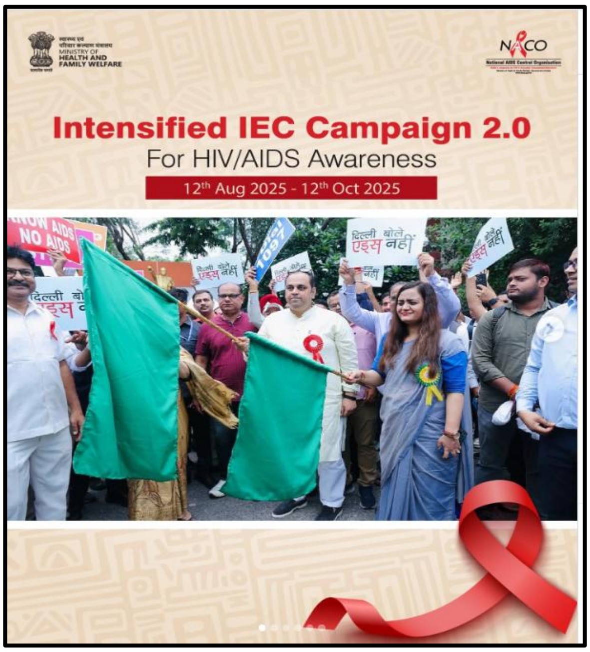

3. सामुदायिक स्तर पर जागरूकता कार्यक्रम

- स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी), आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, आशा कार्यकर्ताओं, पंचायती राज सदस्यों और अन्य लोगों के लिए प्रशिक्षण और संवेदीकरण आयोजित किया गया। ये जमीनी स्तर की पहल व्यवहार परिवर्तन और समग्र सामुदायिक जागरूकता को बढ़ावा देती हैं।

4. उच्च जोखिम वाले समूहों के लिए लक्षित क्रियाकलाप

- जुलाई 2025 तक देश भर में 1,619 लक्षित क्रियाकलाप परियोजनाएं शुरू की गईं। यह रोकथाम, परीक्षण, उपचार और देखभाल सेवाओं तक समान पहुंच सुनिश्चित करता है।

5. कलंक और भेदभाव के खिलाफ विषयगत अभियान

- कलंक को कम करने और एचआईवी (पीएलएचआईवी) के साथ रहने वाले लोगों को शामिल करने को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रव्यापी विषयगत अभियान शुरू किए गए। ये अभियान कार्यस्थलों, स्वास्थ्य देखभाल सेटिंग, शैक्षणिक संस्थानों और समुदायों में भी लागू किए गए हैं।

Figure: Red Run 3

Figure: NACO's stall at Trade Fair 2025

Figure 1 [Nukkad Natak on HIV AIDS being performed at #IITF2023]

6. राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में लोकपाल की नियुक्ति

- एचआईवी और एड्स (रोकथाम और नियंत्रण) अधिनियम, 2017 के तहत, 34 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में लोकपाल नियुक्त किए गए हैं, जो पीएलएचआईवी के खिलाफ भेदभाव से संबंधित शिकायतों का समाधान करते हैं। यह पीएलएचआईवी की गरिमा और अधिकारों की रक्षा के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को मजबूत करता है।[2]

---

[2] एचआईवी/एड्स जागरूकता के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदम | स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय भारत सरकार

निष्कर्ष

एचआईवी/एड्स से निपटने में भारत की यात्रा अनुकूल, नवाचार और साझा समर्पण की एक सम्मोहक कथा का प्रतीक है। प्रारंभिक राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम के चरणों के मूलभूत प्रयासों से लेकर एनएसीपी-वी की दूरदर्शी महत्वाकांक्षाओं तक, राष्ट्र ने अधिकार-केंद्रित नीतियों, समुदाय-संचालित रोकथाम रणनीतियों और व्यापक मीडिया पहलों के माध्यम से नेतृत्व का उदाहरण प्रस्तुत किया है। भारत में एड्स में वैश्विक औसत से अधिक गिरावट होना महत्वपूर्ण है, जिसे व्यापक परीक्षण, एंटीरेट्रोवायरल थेरेपी तक पहुंच में वृद्धि, उच्च जोखिम वाले समूहों तक केंद्रित पहुंच और कलंक से निपटने के लिए पहल द्वारा महत्वपूर्ण रूप से समर्थन प्राप्त किया गया है, जो सभी सहयोगी राज्य और सामुदायिक कार्यों के माध्यम से लागू किए गए हैं। एचआईवी/एड्स के खिलाफ यह स्थायी लड़ाई तत्काल संकट प्रबंधन से लेकर स्थायी ताकत, मानवाधिकारों की रक्षा करने और समुदाय की आवाजों को सबसे आगे सशक्त बनाने तक के दृढ़ विकास को दर्शाती है।

संदर्भ:

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय:

- UNAIDS Estimates 2025
- Sankalak 7th Edition
- India HIV Estimates 2025

पीके/केसी/एसकेएस